

न्यूज़ टाइम्स पोस्ट

वर्ष : 05 अंक : 13 | हिन्दी पाक्षिक | 01 - 15 दिसम्बर, 2020 | मूल्य : ₹ 40 | www.newstimespost.com

UPHIN/2016/7 1925

हरित मानसिकता की जरूरत

नजरिया

अ (निवार्य!) प्रदूषण के बीच
जीवन जीने की चुनौती

आसंका

चरम पर होंगी जलवायु
परिवर्तन की घटनाएं

कोरोना का कहर

देश में 92 लाख के
पर कोरोना केस

21वीं सदी के अंत तक दिखेगा मौसम में भयावह रुझान चरम पर होंगी जलवायु परिवर्तन की घटनाएं

वायुमण्डल में निरंतर जहरीली गैसों बढ़ने का रोना कोई नया नहीं है। इसी तरह इन गैसों से तापमान बढ़ने के कारण ध्रुवों पर लाखों वर्षों से संचित बर्फ की अकूत थाती के पिघलने और उससे समुद्र का जलस्तर बढ़ने के कारण निचले द्वीपों के डूबने के खतरे का आभास भी काफी पहले हो चुका है। फिर भी पर्यावरण की अनदेखी कर अनियोजित औद्योगीकरण और वाहनों की संख्या में बेहिसाब बढ़ोतरी अपनी रफतार से चल रही है। यही कारण है कि हाल के वर्षों में वायुमण्डल का तापमान बढ़ने से तरह-तरह की आपदाएं आ रही हैं। अगर स्थिति को संभालने के लिए कारगर उपाय नहीं किए गए तो भीषण चक्रवात और भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाएं और बढ़ेंगी। इसका सबसे ताजा उदाहरण कोरोना महामारी है, जिससे विश्व की आबादी का बड़ा हिस्सा प्रभावित हुआ है। ऐसे में वैश्विक तापमान में कमी लाने के लिए ग्रीन-इनर्जी के अधिकाधिक उपयोग की अल्पकालिक और दीर्घकालिक योजनाएं तैयार कर उन पर अमल की जरूरत है। साथ में जल, पेड़-पौधों व साफ-सफाई पर अधिक ध्यान देकर ऋषि परम्परा को अपनाना होगा जिससे भारत को फिर विश्व गुरु का स्थान प्राप्त हो सके।



डॉ. भरत राज सिंह

महानिदेशक (तकनीकी)
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज और
प्रभाती वैदिक विज्ञान केंद्र, लखनऊ
मो. 9415025825

पि

छले पांच-सात वर्षों में वायुमंडल में जहरीली हवा बढ़ने से जहां वैश्विक तापमान निरंतर बढ़ रहा है, वहीं तरह-तरह की आपदाओं का प्रकोप भी बढ़ा है। जलवायु परिवर्तन से सभी देश वैश्विक विपदा से जुड़ रहे हैं। जैसे पश्चिमी देश-अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, जर्मनी, इटली आदि में एक तरफ प्रलयकारी चक्रवाती तूफानों, भीषण बर्फबारी से जनजीवन प्रभावित हुआ है, वहीं दूसरी तरफ चक्रवाती भारी बारिश से उनका जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। कमोवेश यही हालत खाड़ी देशों व पूर्वी देशों की भी है। इनके साथ-साथ भूकम्प की तीव्रता और अधिकता भी बढ़ी है। कोविड-2019 जैसी महामारी से अबतक विश्व की 710 करोड़ जनसंख्या में से करीब छह फीसदी लोग संक्रमित हो चुके हैं और लगभग 14 लाख लोगों ने जान गंवाई है। विकास का पहिया रुक गया है और टीका तैयार न होने की वजह से लोग आशंकाओं के बीच जीवन जी रहे हैं।

गंभीर हो रही धुंध की समस्या

इधर, पांच-सात वर्षों से जब भी ठंड का मौसम शुरू होता है, भारत के अधिकतर उत्तरी शहरों, जैसे - चंडीगढ़, भोपाल, गुरुग्राम, दिल्ली, नोएडा,



गाजियाबाद, कानपुर, आगरा, प्रयागराज, वाराणसी आदि में एक सप्ताह से महीने भर तक धुंध के बादल छाए रहते हैं। इससे साँस लेने में कठिनाई जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं और तरह-तरह की बीमारियां पैदा होती हैं। यहाँ तक कि इस वर्ष कोरोना के प्रकोप को छोड़ भी दें तो स्कूल-कॉलेज बंद करने की नौबत आ जाती है। अधिकतर वैज्ञानिक इसका ठीकरा पराली जलाने व दीपावली पर पटाखे, चटाई व धुएँ देने वाले फुलझड़ी से हवा के जहरीला बनने पर फोड़ते हैं। हाँ! इसे कुछ हद तक माना जा सकता है लेकिन सालों साल बढ़ते औद्योगिकीकरण व वाहनों की असीमित संख्या के कारण बढ़ रहा प्रदूषण इसका मुख्य कारण है। इसपर गहन चिंतन व उसे कम करने के उपायों पर विचार करना जरूरी है। मैं मानता हूँ कि दीपावली पर त्योहार के उत्साह में प्रदर्शन की होड़ में बड़े शहरों में क्रैकर्स, चटाई व धुएँ देने वाले

फुलझड़ियों पर करोड़ों रुपये का वारा-न्यारा किया जाता है और त्योहार पर हवा को जहरीला बना दिया जाता है। इसका असर गम्भीर होता है क्योंकि बारिश के मौसम के अंतिम दौर व शरद ऋतु आगमन के इस संक्रमण काल में रात में हवा में नमी आने व जलविन्दुओं में भारीपन और उसके ओस का रूप लेने से आसमान में मौजूद जहरीले कण पुनः धरती के नजदीक आकर गैस चैम्बर जैसा आवरण बना देते हैं जिससे साँस लेने में तकलीफ होती है। इस प्रकार की धुएँ की धुंध चारों तरफ इकट्ठा होकर पूरे वातावरण में पीएम-2.5 की मात्रा 585-690 प्रति घनमीटर व पीएम-10 की मात्रा 1700 प्रति घनमीटर तक पहुँचा देते हैं और कई जगह दिन भर धुंध के बादल बने रहते हैं। यह स्थिति जीवन के लिए घातक बन जाती है क्योंकि साँस लेते समय नैनो आकार के ये जहरीले कण श्वास नाली के माध्यम से फेफड़ों, हृदय की धमनियों व आंतों में पहुंचकर

चिपक जाते हैं। बाहर न निकल पाने के कारण बाद में ये शरीर के अंदरूनी रास्तों को संकरा कर देते हैं, जिससे कैंसर, हृदयरोग, किडनी, दमा व सांस की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

औद्योगिक क्रांति व असीमित वाहनों से अधिक नुकसान

वर्ष 1853 में हुई औद्योगिक क्रांति व वाहनों की संख्या में असीमित बढ़ोतरी से पर्यावरण को मुख्यतः 75 फीसदी नुकसान पहुंचा है। ज्वलनशील पदार्थों जैसे-कोयला, डीजल, पेट्रोल, गैस आदि हाइड्रोकार्बन पदार्थों से उत्पन्न ग्रीनहाउस गैसों ने पर्यावरण प्रदूषण बढ़ाने में सबसे बड़ी भूमिका निभाई है। कार्बन मोनोआक्साइड, कार्बन डाई-आक्साइड, नाइट्रस आक्साइड, मीथेन, सल्फर आदि गैसों ने आसमान में पृथ्वी के 15-किलोमीटर की ऊंचाई पर बादल के रूप में एक सतह बना ली है जिससे पृथ्वी से विकिरण के बाद गर्मी की किरणें पुनः पृथ्वी पर वापस आने से वैश्विक तापमान में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है। यहाँ एक उदाहरण देना चाहूंगा- '1952 में लन्दन में एक सप्ताह धुन्ध के बादल छाने व वातावरण में सल्फर डाई-ऑक्साइड की अधिक मात्रा से लगभग 4000 मौतें हुई थी, वहीं अमेरिका में भी 1972 में आसमानी धुन्ध से लगभग 25 मौतें होने के सबूत मिलते हैं।'

चक्रवाती तूफान

प्रदूषण से जलवायु परिवर्तन भी चक्रवाती तूफान का प्रमुख कारण है। अभी कुछ दिनों पूर्व नासा के 'ग्लोबल रेन्यू मेजरमेंट' (जीआरएम) कोर ऑब्जर्वेटरी सैटेलाइट द्वारा 4 नवंबर को रात 11.41 बजे 'एटा' तूफान जो श्रेणी-4 के तूफान के रूप में निकारागुआ के तट पर लैंडफॉल के लगभग सात घंटे बाद देखा गया। एनएचसी के पूर्वानुमानों के संकेतों से 'एटा' मध्य अमेरिका के उत्तर-पश्चिम में आगे बढ़ने और कैरेबियन सागर में उत्तर-पूर्व में पहुंचने तथा क्यूबा और फ्लोरिडा में एक सप्ताह में 'जेटा' तूफान के रूप में पहुंचने का अनुमान लगाया गया था। यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है कि 'एटा' 2020 का 28 वां तूफान था, जो तूफान के मौसम में सबसे अधिक तीव्रता वाला पाया गया और 2005 के 27 तूफानों के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए।

'जेटा' तूफान डेल्टा के समान एक पथ का अनुसरण कर रहा था, जो कि युकाटन प्रायद्वीप को पार करने के बाद मैक्सिको की खाड़ी के पार अपना रास्ता बना लिया और लुइसियाना तट पर 9 अक्टूबर को एक श्रेणी-2 के तूफान के रूप में उभरा था। जेटा की वजह से उत्तरी खाड़ी तट भारी भूस्खलन हुआ। रिकॉर्ड-ब्रेकिंग सीजन में ऐसा करने वाला यह सातवां सबसे विनाशकारी तूफान था जो ट्रॉपिकल स्टॉर्म क्रिस्टोबल, तूफान लॉरी, ट्रॉपिकल स्टॉर्म मार्को, तूफान सेली, ट्रॉपिकल स्टॉर्म बीटा और तूफान डेल्टा के बाद आया। इसने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। इससे स्पष्ट है कि वैश्विक तापमान में निरंतर बढ़ोतरी से उष्णकटिबंधीय चक्रवाती तूफानों की संख्या हर साल बढ़ रही है। जन-जीवन जहाँ एक तरफ भीषण तूफानों के कारण हवा के दबाव से रिहायसी मकानों की क्षति



तूफान जेटा 28 अक्टूबर, 2020 की सुबह नासा के टेल उपग्रह पर मॉडरेट रिजॉल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रोमाइटर (MODIS) द्वारा देखा गया था। (संस्करण : नासा की वेबसाइट)

भविष्य में दोबारा आ सकती है कोरोना जैसी महामारी

उत्तरी-दक्षिणी ध्रुव कहा जाने वाला आर्कटिक व अंटार्कटिक के बर्फीले सागर की बर्फ तेजी से पिघलने के कारण जहाँ समुद्र के किनारे रहने वाले नीचले सतह के द्वीपों के डूबने की शंका से नकारा नहीं जा सकता वही कुछ देशों या 21वीं सदी के बाद ग्लेशियर टूटकर एक सापने जैसा हो सकता है। ऐसे में जो जीवाश्म, वायरस आदि लाखों वर्षों से बर्फ की चट्टानों में जीवित दबे हुए हैं, वे दोबारा दिखने शुरू हो जाएंगे। ऐसे में कोरोना जैसी महामारी का खतरा भी पैदा हो जाएगा। आज जब फिर ठंडक ने गिन देशों में अपना पैर पसार रखा है वहीं कोरोना का विस्फोट लेना कोई अपरज की बात नहीं होगी। क्योंकि वायु की गुणवत्ता दिनों-दिन खराब हो रही है। यद्यपि दिल्ली व लखनऊ आदि में बीच में बारिश होने से कुछ दिनों तक धुंध छटी हुई थी और आसमान में जमे प्रदूषण के कण जमीन पर आ जाने से साफ हो गया था, परंतु अब फिर वायु की गुणवत्ता तेजी से घट रही है। अतः सबका कर्तव्य बनता है कि कोरोना की गाइड लाइन-दो-गज की सोशल डिस्टेंसिंग व मास्क लगाने को अपने जीवन का आवश्यक अंग बनाएं तथा वैश्विक तापमान में कमी लाने के लिए ग्रीन-इनर्जी का अधिक से अधिक उपयोग करें। जल, पेड़-पौधे व साफ-सफाई पर अधिक ध्यान दें, भारतवर्ष की ऋषि परम्परा को अपनाएं और लोगों में संस्कार पैदा करें, जिससे भारतवर्ष को फिर विश्व गुरु का स्थान प्राप्त हो सके।

लॉकडाउन के बावजूद ग्रीनहाउस गैस रिकॉर्ड ऊंचाई पर

कोरोना महामारी के चलते दुनिया भर में लॉकडाउन हुए, उड़ानें तक बंद हो गईं, बावजूद इसके ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र की ताजा रिपोर्ट में यह बात कही गई है। संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) का कहना है कि लॉकडाउन करने, बॉर्डर सील करने और उड़ानों को रद्द करने से कार्बन डाईऑक्साइड जैसी कई ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती जरूर हुई है, लेकिन इतनी नहीं कि इससे बहुत बड़ा फर्क पड़ सके। डब्ल्यूएमओ ने कहा है कि वर्ष 2019 में हवा में कार्बन डाईऑक्साइड के स्तर ने एक नया रिकॉर्ड बनाया, जो इस साल भी जारी है। डब्ल्यूएमओ के अनुसार, 2019 में कार्बन डाईऑक्साइड का स्तर दस लाख हिस्सों में 410.5 था। यह पिछले साल की तुलना में भी ज्यादा है और पिछले दशक के औसत से भी अधिक है। डब्ल्यूएमओ के महासचिव प्रोफेसर पीटरी तालस ने इस बारे में कहा कि हमारे रिकॉर्ड के इतिहास में इस तरह की वृद्धि दर कभी नहीं देखी गई है। उनका कहना है कि 2015 से यह स्तर लगातार बढ़ रहा है और इसे रोकने के लिए जल्द ही कुछ पक्के समाधान सोचने होंगे।

पहुंती है, वहीं दूसरी तरफ बेमौसम भारी वर्षा व भूस्खलन तथा सर्दियों में भीषण बर्फबारी से दुनिया के अधिकतर शहर, गांव, पहाड़ियों तथा समुद्री तटबंधों में उथल-पुथल से तबाही मचती है।

ध्रुवों की एक-चौथाई बर्फ पिघली

एक पहलू यह भी देखने में आया है कि आर्कटिक (उत्तरी ध्रुव) की दो-तिहाई तथा अंटार्कटिक (दक्षिणी ध्रुव) एक-चौथाई बर्फ लगभग पिघल गई है। इससे मौसम में भारी परिवर्तन हो चुका है और आगे कोरोना से भी अधिक भयंकर महामारी की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। पर्यावरण में इन परिवर्तनों के कारकों

को कम करने के लिए यद्यपि विश्व में जागरूकता दिवसों का आयोजन किया जाता है। परंतु हमें पहले खुद को पर्यावरण की संरक्षा के प्रयासों के प्रति जागरूक करना होगा। इसके लिए खुद को स्थानीय अभियानों से जोड़ना होगा और उन घटनाओं का पता लगाना होगा जिनसे आप समाज को जोड़ने के लिए समर्थन प्राप्त कर सकते हैं। जैसे विश्व जल दिवस पर जल संरक्षण के प्रयासों या विश्व ओजोन दिवस पर ग्रीन गैस उत्सर्जन कम करने के प्रयासों को कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है और आप अपने को इससे कैसे जोड़ सकते हैं। इसके लिए आपको स्थानीय समुदाय/संगठनों के साथ मिलकर टीम बनानी होगी।